अध्याय : 7

कार्ल मार्क्स

(Karl Marx : 1818-1883)

कार्ल **मार्क्स** आधुनिक एवं वैज्ञानिक साम्यवाद तथा अधिकांश समाजवादी विचारधाराओं के सर्वमान्य जनक हैं। वैसे तो साम्यवाद की चर्चा अति प्राचीन है और **मार्क्स** के पहले **प्लेटो, सेंट साइमन, फोरियर, लुई ब्लांक, रॉबर्ट आवेन** आदि विद्वानों ने भी राष्ट्रीय सम्पत्ति के उचित वितरण तथा विभिन्न वर्गों में सहयोगी सम्बन्ध, पर बल देते हुए समाज की नई व्यवस्था की योजना प्रस्तुत की थी; परन्तु इन समाजवादी विचारकों के विचार मुख्यतः राजनीतिक अथवा धार्मिक आधारों पर आधारित थे। **मार्क्स** ने ही सर्वप्रथम साम्यवाद को न केवल एक नवीन और मौलिक रूप प्रदान किया बल्कि उसे ऐसे सुदृढ़ वैज्ञानिक आधार पर प्रतिष्ठित किया जोकि दिन-प्रतिदिन दृढ़तर ही होता जा रहा है। आज शायद ही कोई ऐसा देश हो जहाँ इस 'वाद' के मानने वाले लोग न हों। समग्र संसार के श्रमिक और क्रान्तिकारी आन्दोलन **मार्क्स** के प्रभावशाली विचारों से प्रभावित हुए हैं। इसीलिए उन्हें 'अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा के महान् शिक्षक और नेता' कहा जाता है। इस दृष्टि से **मार्क्स** संसार के न केवल महान् अपितु युग-प्रवर्तक विचारकों में से हैं। **ई. स्तेपानोवा** का तो दावा है कि **मार्क्सवाद** 'मानवता को पथ-प्रदर्शक ध्रुव-तारे की भाँति, कम्युनिज्म का रास्ता दिखा रहा है।'[1]

✍ जीवन-चित्रण तथा कृतियाँ
(Biographical Sketch and Writings)

'अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा के इस महान् शिक्षक और नेता' **कार्ल मार्क्स** का जन्म (प्रशिया के राइन प्रान्त के) ट्रियर नगर के एक यहूदी परिवार में 5 मई, सन् 1818 को हुआ था। उनके पिता वकील थे और उन्होंने ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया था। **मार्क्स** की शिक्षा सन् 1830 से 1835 तक ट्रियर के एक अच्छे स्कूल–ट्रियर जिमनेजियम–में होती रही। उन्होंने अपने स्कूल की अन्तिम परीक्षा के लिए जो निबन्ध चुना उसका शीर्षक था–**पेशा चुनने के सम्बन्ध में एक तरुण के विचार**। इस निबन्ध से यह पता चलता है कि इस सत्रह वर्षीय बालक ने उस समय की मानवता की त्यागपूर्ण सेवा करने में अपने जीवन की सार्थकता समझी थी। इस स्कूल की अन्तिम परीक्षा पास करने

Scanned with CamScanner

के पश्चात् **मार्क्स** पहले तो बोन और फिर बर्लिन विश्वविद्यालय के कानून विभाग में दाखिल हुए। आपने अपना विषय कानून चुना था, लेकिन दर्शनशास्त्र और इतिहास में भी उनकी बहुत अधिक रुचि थी।

कार्ल मार्क्स की विचारधाराओं पर उस समय की अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का प्रभाव स्पष्ट था। पूँजीवाद का विकास हो जाने के कारण यूरोप के कई देशों में सामन्तों और भूदासों के बीच के सम्बन्धों के अवशेष अधिकाधिक रूप में असह्य बन चुके थे। हर कहीं बड़े पैमाने के पूँजीवादी उद्योग के जन्म और विकास के साथ-साथ किसानों तथा दस्तकारों की दशा भी बिगड़ गई थी और सर्वहारा-वर्ग पैदा हो गया था। वह एक ऐसा वर्ग था जोकि उत्पादन के सभी साधनों से वंचित था। उस समय जर्मनी की जनता एक चक्की के दो पाटों के बीच पिस रही थी। एक ओर से सामन्तवाद का अवशेष और दूसरी ओर से अपरिपक्व पूँजीवाद उसे पीड़ित कर रहा था। इन अवस्थाओं का प्रभाव **मार्क्स** की विचारधाराओं पर बहुत ही स्पष्ट है।

मार्क्स ने अपने विद्यार्थी-जीवन में ही **हीगल** की कृतियों से परिचय कर लिया था और वामपक्षी हीगलवादियों से सम्पर्क बढ़ाना शुरू कर दिया था। **मार्क्स** ने जेना विश्वविद्यालय में अपना एक व्याख्यात्मक निबन्ध प्रस्तुत किया था : उसका शीर्षक था—**दैमोक्राइतस और एपिकुरस के प्रकृति दर्शनों में अन्तर**। उनके उस व्याख्यात्मक निबन्ध से पता चलता है कि उस समय उनका दृष्टिकोण यद्यपि भाववादी था, फिर भी वह **हीगल** के असंगतिपूर्ण दर्शन से अनीश्वरवादी और क्रान्तिकारी निष्कर्ष निकालने लगे थे; उदाहरणार्थ, **हीगल** के एपिकुरस के भौतिकववाद और अनीश्वरवाद को लेकर उनकी निन्दा की थी। इसके विपरीत, **मार्क्स** ने धर्म और अन्धविश्वास के विरुद्ध उस प्राचीन यूनानी दार्शनिक के साहसपूर्ण संघर्ष की सराहना की। **मार्क्स** को उस व्याख्यात्मक निबन्ध पर ही अप्रैल, सन् 1841 में दर्शनशास्त्र के डॉक्टरेट की उपाधि मिली।

मार्क्स की इच्छा बोन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बनने की थी; परन्तु उसकी सुविधा न मिलने पर आपने अप्रैल, सन् 1842 में **राइनिश जाइटुंग** (राइन की गज़ट) नामक पत्रिका में काम करना शुरू किया और उसके सम्पादक भी बन गए। इस पत्रिका के कॉलमों के द्वारा **मार्क्स** ने एशिया और समूचे जर्मनी में उस समय पाए जाने वाले राजनीतिक और धार्मिक उत्पीड़न के विरुद्ध तथा आम जनता के हितों के पक्ष में आवाज उठाई। उन्होंने बार-बार यह अनुभव किया कि जनता की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं के प्रति एशिया की सरकार और उनके अधिकारियों का दृष्टिकोण अत्यन्त निर्दयतापूर्ण है। इन्हीं तथ्यों के आधार पर वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सरकार, उसके अधिकारी तथा कानून शासन-वर्गों के हितों का ही प्रतिनिधित्व और समर्थन करते हैं, जनता के हितों का नहीं।

अपने उग्र विचारों के कारण उपरोक्त पत्रिका के हिस्सेदारों से **मार्क्स** का मतभेद हुआ और उन्होंने 17 मार्च, सन् 1843 को सम्पादक-पद से इस्तीफा दे दिया और जर्मनी छोड़कर पेरिस चले गए। परन्तु इसके पहले ही आपका विवाह जेनी फॉन बेस्टफालेन

Scanned with CamScanner

से हुआ। जेनी उनकी बचपन की मित्र थी और विद्यार्थी-काल में ही मार्क्स के साथ उसकी मँगनी हो चुकी थी।

पेरिस में अगस्त, सन् 1844 के अन्त में **मार्क्स** और **एंगेल्स** का वह ऐतिहासिक मिलन हुआ जिसमें उन्होंने पाया कि दोनों के विचार पूर्णतः एक-दूसरे से मेल खाते हैं। इसके बाद ही उन दोनों मित्रों के बीच वह रचनात्मक सहयोग आरम्भ हो गया जिसका इतिहास में कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। **लेनिन** ने उचित ही लिखा है कि 'प्राचीन काल की कथाओं में हमें मित्रता के बहुत से हृदय-द्रावक उदाहरण मिलते हैं, लेकिन यूरोप का सर्वहारा-वर्ग यह दावा कर सकता है कि उसके विज्ञान की रचना ऐसे दो अध्येताओं और योद्धाओं ने की थी जिनकी परस्पर मैत्री के सम्बध प्राचीन समय की मानवीय मित्रता की सबसे हृदय-द्रावक कहानियों को भी फीका बना देते हैं।''

साइलेसिया के बुनकरों के जून, सन् 1844 के विद्रोह का **मार्क्स** ने बड़े उत्साह से स्वागत किया। इस पर प्रशिया की सरकार ने फ्रांस की सरकार पर दबाव डाला और **मार्क्स** को फ्रांस से देश-निकाला दे दिया गया। फरवरी, सन् 1845 में आप ब्रुसेल्स जाकर रहने लगे। इसी समय **मार्क्स** और **एंगेलस** की संयुक्त रचना **होली फैमिली** प्रकाशित हुई जिसमें सर्वहारा-वर्ग के विश्वव्यापी ऐतिहासिक उद्देश्य से सम्बन्धित विचारों की लगभग एक समूची प्रणाली खड़ी कर दी गई थी। **होली फैमिली** में नए क्रान्तिकारी **भौतिकदर्शन** दर्शन का और सर्वहारा-वर्ग की सैद्धान्तिक विचारधारा का तत्त्व मौजूद था।

मार्क्स और **एंगेल्स** ने इतिहास के भौतिकवादी सिद्धान्तों से सम्बन्धित समाज-विज्ञान को अधिक स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने के लिए एक दूसरी संयुक्त रचना **जर्मन विचारधारा** शुरू की। इसमें उन्होंने **हीगल** के भाववादी और नए हीगलवादियों के मनोगत भाववादी दर्शन की विस्तृत आलोचना की। कम्युनिज्म के सैद्धान्तिक स्तम्भ हैं—द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और ऐतिहासिक भौतिकवाद। इन स्तम्भों के निर्माण में **जर्मन विचारधारा** ने सर्वाधिक महत्त्व का कार्य किया था।

मार्क्स और **एंगेल्स** ने 'कम्युनिस्ट लीग' की दूसरी कांग्रेस की तैयारी को बड़ा महत्त्व दिया। यह कांग्रेस सन् 1847 में नवम्बर के अन्त और दिसम्बर के आरम्भ में लन्दन में हुई थी। इसमें इन दो मित्रों के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को सर्वसम्मत्ति से स्वीकार कर लिया गया और उन्हें एक **कम्युनिस्ट घोषणापत्र** तैयार करने का काम सौंपा गया। **कम्युनिस्ट घोषणापत्र मार्क्स** की अमर रचना है जोकि लन्दन से फरवरी, सन् 1848 में प्रकाशित हुई। यह वैज्ञानिक कम्युनिज्म का कार्यक्रम सम्बन्धी दस्तावेज है। इसमें ही सबसे पहली बार सर्वहारा के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों की एक संक्षिप्त और सरल व्याख्या की गई थी।

सन् 1847 में **मार्क्स** ने **दर्शनशास्त्र की दरिद्रता** ***(The Poverty of Philosophy)*** की रचना की। इस रचना में ही पहली बार द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद के बुनियादी सूत्र पेश किए गए। इसमें सारी **पूँजीवादी अर्थव्यवस्था** की प्रमुख तथा बुनियादी दुर्बलताओं और दोषों का उल्लेख किया गया। **मार्क्स** ने पूँजीवादी अर्थशास्त्रियों और

Scanned with CamScanner

उनके समर्थक **प्राधों** के मतों का खण्डन किया और बताया कि समाज की अर्थव्यवस्था की विभिन्न मान्यताएँ सैद्धान्तिक रूप में सामाजिक सम्बन्धों को ही व्यक्त करते हैं, वे ऐतिहासिक रूप से परिवर्तनशील मान्यताएँ हैं और उन्हें जन्म देने वाली परिस्थितियों के मिटने के बाद वे मान्यताएँ भी नहीं रहेंगी। **प्राधों** ने पूँजीवाद में 'सुधार' करने का एक नुस्खा पेश किया था। **मार्क्स** ने उनकी तर्कहीनता को बताते हुए यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि पूँजीवादी समाज में शोषण, गरीबी और संकटों का रहना अनिवार्य है और उन्हें तभी दूर किया जा सकता है जब समाज से पूँजीवादी उत्पादन-प्रणाली ही हटा दी जाए।

फ्रांस में वर्ग-संघर्ष (1848 से 1850 तक) नामक अपनी रचना में ही **मार्क्स** ने 'सर्वहारा अधिनायकत्व' के प्रसिद्ध सूत्र का प्रयोग किया है। इस रचना में स्पष्ट रूप से यह दिखाने का प्रयत्न किया गया है कि वैज्ञानिक समाजवाद विभिन्न प्रकार के पूँजीवादी, निम्न-पूँजीवादी और कल्याणकारी समाजवाद से सर्वथा भिन्न है। इसमें कहा गया है कि वैज्ञानिक समाजवाद ''क्रान्ति के स्थायित्व की घोषणा है, वह सामान्य रूप से सभी वर्ग-विभेदों को दूर करने, उन विभेदों के आधार बने सभी प्रकार के उत्पादन-सम्बन्धों को तोड़ने, इन उत्पादन-सम्बन्धों के अनुरूप बने सामाजिक सम्बन्धों को नष्ट करने और इन सामाजिक सम्बन्धों से पैदा होने वाले सभी विचारों में क्रान्ति लाने के लिए एक आवश्यक संक्रमणकालीन व्यवस्था के रूप में सर्वहारा-वर्ग के अधिनायकत्व की घोषणा है।''

सन् 1897 में **मार्क्स** का विश्वविख्यात ग्रन्थ **दास कैपिटल** *(Das Kapital)* का प्रथम खण्ड प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ का दूसरा और तीसरा खण्ड उनके जीवनकाल में प्रकाशित न हो पाया था और उन्हें **एंगेल्स** ने क्रमशः सन् 1885 और 1894 में प्रकाशित किया था। **कैपिटल मार्क्स** की एक अनुपम देन है। **लेनिन** के शब्दों में, ''यह ग्रन्थ ही वह मुख्य और बुनियादी रचना है जिसमें वैज्ञानिक समाजवाद की व्याख्या की गई है।'' इस ग्रन्थ में सर्वहारा-वर्ग के ऐतिहासिक कर्त्तव्य के सिद्धान्त, समाजवादी क्रान्ति और सर्वहारा के अधिनायकत्व को गहन दार्शनिक तथा अर्थशास्त्रीय ढंग से बताया गया है। **ई. स्तेपानोवा** के मतानुसार, **''मार्क्स** की यह महान् रचना पूँजीवादी गुलामी के विरुद्ध सर्वहारा के वर्ग-संघर्ष में उसका एक शक्तिशाली सैद्धान्तिक अस्त्र है।'' इन सब गुणों के कारण ही **कैपिटल** को समाजवादियों का **बाइबिल** माना जाता है।

मार्क्स ने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में जो पत्र लिखे थे, उनमें आसन्न रूसी क्रान्ति के बारे में उत्कट आशा की भलक मिलती है। उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि रूसी क्रान्ति विश्व-इतिहास के प्रवाह को बड़ी तेजी से मोड़ देगी।

मानवोपरि मानसिक परिश्रम और चिरसंगिनी निर्धनता ने **मार्क्स** की सशक्त काया को असमय में ही निर्बल बना दिया। 2 दिसम्बर, 1881 में उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। इससे उन्हें भारी सदमा पहुँचा। उनका स्वास्थ्य अब और भी चिन्ताजनक होता चला गया। फेफड़े की सूजन और पुरानी खाँसी की चिकित्सा के लिए वह अल्जीरिया

Scanned with CamScanner

और दक्षिणी फ्रांस भी गए; लेकिन उससे भी कोई लाभ नहीं हुआ। इसी बीच उन्हें एक आघात और लगा—उनकी सबसे बड़ी पुत्री जेनी की मृत्यु हो गई। जनवरी, सन् 1883 में उन पर पुरानी खाँसी का एक और हमला हुआ। इसके साथ ही कई और पेचीदगियाँ पैदा हो गई। उनकी हालत तेजी से गिरती ही चली गई और 14 मार्च, सन् 1883 को **मार्क्स** इस संसार से विदा हो गए।

एंगेल्स ने संसार के सभी भागों में पत्र भेजे और **मार्क्स** के मित्रों तथा अनुयायियों को बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी आन्दोलन को इस दुःखद घटना से कितनी भारी क्षति पहुँची है। उन्होंने लिखा, "हमारी पार्टी के सबसे महान् मस्तिष्क ने सोचना बन्द कर दिया है; आज एक ऐसे दृढ़तम हृदय ने धड़कना बन्द कर दिया है जैसा मैंने पहले कभी देखा-सुना नहीं था।"

17 मार्च, 1883 को शनिवार के दिन **मार्क्स** के शव को लन्दन के हाइगेट नामक कब्रिस्तान में दफनाया गया। **एंगेल्स** ने उनकी समाधि के बगल में ही एक हृदय-विदारक भाषण दिया। अपने इस भाषण में उन्होंने वैज्ञानिक कम्युनिज्म के इस संस्थापक, मजदूर-वर्ग के इस महान् नेता के भागीरथ प्रयत्नों का, सभी मेहनतकशों और शोषितों के लिए, सर्वहारा-वर्ग के उद्देश्य के लिए उनके त्यागपूर्ण और वीरोचित संघर्षों का आँखों-देखा और सजीव चित्र उपस्थित कर दिया। उन्होंने अपना भाषण इस भविष्यवाणी के साथ समाप्त किया, "उनका नाम युगो-युगों तक अमर रहेगा, और इसी तरह उनकी कीर्ति भी अमर रहेगी।"

Scanned with CamScanner

... चाहिए।

विभिन्न युगों की भौतिकवादी व्याख्या
(Materialist Interpretation of Different Ages)

मार्क्स के अनुसार उत्पादन-प्रणाली के प्रत्येक परिवर्तन के साथ लोगों के आर्थिक

Scanned with CamScanner

सम्बन्ध, सामाजिक व्यवस्था आदि में भी परिवर्तन हो जाता है। इस दृष्टि से मानव-इतिहास को **पाँच** युगों में बाँटा जा सकता है--इनमें से प्रथम तीन युग बीत चुके हैं, चौथा चल रहा है और पाँचवाँ व अन्तिम अभी आने को है। ये पाँच युग हैं--(1) आदिम साम्यवादी युग, (2) दासत्व युग, (3) सामन्तवादी युग, (4) पूँजीवादी युग और (5) समाजवादी युग।

(1) आदिम साम्यवादी युग इतिहास का प्रारम्भिक युग है। इस युग में उत्पादन के साधन किसी व्यक्ति-विशेष के नहीं, बल्कि पूरे समुदाय के होते थे। उत्पादन और वितरण साम्यवादी ढंग से होता था। पहले-पहल पत्थर के औजार और बाद में तीर-धनुष से लोग फल-मूल इकट्ठा करते तथा पशुओं का शिकार करते थे। जंगलों से फल इकट्ठा करने, पशुओं का शिकार करने, मछली मारने, रहने के लिए किसी-न-किसी प्रकार का 'घर' बनाने और ऐसे ही अन्य कार्यों में सब लोग मिल-जुलकर काम करने को बाध्य होते थे, क्योंकि परिस्थितियाँ ही कुछ इस प्रकार की थीं कि ये सब काम अकेले नहीं किए जा सकते थे। संयुक्त श्रम के कारण ही उत्पादन के साधनों पर तथा उनसे मिलने वाली वस्तुओं पर सबका अधिकार होता था। उस समय उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत अधिकार की धारणा का अभाव था। इसलिए वर्ग-प्रथा न थी, और न ही किसी प्रकार का शोषण।

(2) इसके बाद दासत्व युग का आविर्भाव हुआ। दास-व्यवस्था के अन्तर्गत उत्पादन के साधनों पर दास के मालिकों का अधिकार होता था, साथ ही साथ उत्पादन कार्य को करने वाले श्रमिकों अर्थात् दासों पर भी उनका अधिकार होता था। इन दासों को उनके मालिक पशुओं की भाँति बेच सकते थे, खरीद सकते थे या मार सकते थे। इस युग में खेती और पशुपालन का आविष्कार हुआ और धातुओं के औजारों को उपयोग में लाया गया। इस युग में निजी सम्पत्ति की धारणा विकसित हुई, सम्पत्ति कुछ लोगों के हाथों में अधिकाधिक एकत्र होने लगी तथा सम्पत्ति के अधिकारी इस अल्पसंख्यक ने बहुसंख्यक को दास बनाकर रखा। पहले की भाँति अब लोग स्वेच्छा से मिल-जुलकर काम नहीं करते थे, बल्कि उन्हें दास बनाकर उनसे जबरदस्ती काम लिया जाता था। इस प्रकार समाज दो वर्गों--दास तथा अनेक मालिक--में बँट गया। इन शोषक और शोषित वर्गों में संघर्ष भी स्वाभाविक था।

(3) तीसरा युग **सामन्तवादी युग** था। इस युग में उत्पादन के साधनों पर सामन्तों का आधिपत्य होता था। ये सामन्त उत्पादन के साधनों, विशेषतः भूमि के स्वामी होते थे। गरीब अर्द्ध-दास किसान इन सामन्तों के अधीन थे। उत्पादन का कार्य इन्हीं भूमिहीन किसानों से करवाया जाता था। किसान दास न थे, पर उन पर अनेक प्रकार के बन्धन थे। इन्हें सामन्तों की भूमि की भी जुताई-बुआई आदि बेगार के रूप में करनी पड़ती थी और युद्ध के समय उनको सेना में सिपाहियों के रूप में काम करना पड़ता था। इन सबके बदले में उन्हें अपने सामन्तों से अपने निर्वाह के लिए भूमि मिलती थी। निजी सम्पत्ति की धारणा इस युग में और भी प्रबल हुई और सामन्तों द्वारा किसानों

Scanned with CamScanner

का शोषण भी प्रायः दासत्व युग की भाँति होता था। इन दोनों वर्गों में संघर्ष और भी स्पष्ट था।

(4) चौथा युग आधुनिक **पूँजीववादी युग** है। इस युग का प्रादुर्भाव मशीनों के आविष्कार तथा बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों के जन्म के फलस्वरूप हुआ इस युग में उत्पादन के साधनों पर पूँजीपतियों का अधिकार होता है। उत्पादन-कार्य करने वाला दूसरा वर्ग—वेतनभोगी श्रमिक—व्यक्तिगत रूप में स्वतन्त्र होते हैं; इस कारण दासों की भाँति उन्हें पूँजीपति लोग बेच या मार नहीं सकते हैं; परन्तु चूँकि उत्पादन के साधनों पर श्रमिक का कुछ भी अधिकार नहीं होता, इस कारण अपने तथा अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भूखों मरने से बचाने के लिए उन्हें अपने श्रम को पूँजीपतियों के हाथ बेचना पड़ता है जोकि उन्हें नाम-मात्र का वेतन देते हैं। पूँजीपतियों के इस प्रकार के उत्तरोत्तर बढ़ने वाले शोषण के फलस्वरूप श्रमिकों की दशा दिन-प्रतिदिन अधिक दयनीय होती जाएगी और अन्त में श्रमिक-वर्ग बाध्य होकर क्रान्ति के द्वारा पूँजीपतियों को उखाड़ फेकेगा। इस प्रकार **सर्वहारा के अधिनायकत्व** की स्थापना होगी और समाजवादी या साम्यवादी युग के आगमन का पथ प्रशस्त होगा।

(5) पाँचवाँ और आधुनिकतम युग होगा **समाजवादी या साम्यवादी युग**। यह युग सर्वरूप में वर्ग-विहीन, राज्य-विहीन और शोषण रहित होगा। जैसाकि पहले भी कहा गया है, यह तभी सम्भव होगा जबकि पूँजीवादी व्यवस्था को खूनी क्रान्ति के द्वारा श्रमिक वर्ग उखाड़ फेंकेगा और शासकीय शक्ति पर अपना अधिकार जमा लेगा। परन्तु श्रमिक-वर्ग के हाथ में शक्ति आ जाने से ही समाजवाद की स्थापना या समाजवादी व्यवस्था सम्भव न होगी क्योंकि पूँजीवादी वर्ग का सम्पूर्ण विनाश उस स्तर पर भी न होगा और उस स्तर के बचे-खुचे कुछ लोग रह ही जाएँगे जो उस नवीन समाजवादी व्यवस्था को उलट देने का प्रयत्न करेंगे। इन लोगों का विनाश धीरे-धीरे ही होगा और इसके लिए आवश्यक तैयारी की आवश्यकता होगी। नए सिरे से समस्त समाज का पुनर्निर्माण करना होगा। यही संक्रमणकालीन युग होगा। इस युग में राज्य का प्रमुख कार्य निम्नलिखित होगा—**भूमि के व्यक्तिगत स्वामित्व का अन्त, यातायात के साधनों का राष्ट्रीयकरण, कानून द्वारा मुद्रा का नियन्त्रण, व्यापार तथा वाणिज्य का नियमन, सम्पत्ति के उत्तराधिकार को उन्मूलन, कारखानों में बाल-श्रम का निषेध और प्रत्येक प्रकार के एकाधिकारों या विशेषाधिकारों का अन्त करना।** इस युग में समाजवादी व्यवस्था के पुनर्निमाण की योजना निम्नलिखित आधारों पर होगी—

(1) पुत्र को पिता से बिना श्रम किए हुए ही पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने की परम्परा समाप्त कर दी जाएगी। सम्पत्ति को उत्तराधिकारी के रूप में कोई नहीं प्राप्त कर सकेगा।

(2) देश की समस्त भूमि, कारखानों, यातायात और सन्देशवाहन के साधनों तथा आर्थिक उत्पादन के समस्त साधनों पर राज्य का अधिकार होगा; इन पर व्यक्तिगत अधिकार का अन्त हो जाएगा; पूँजीपति और जमींदार नहीं रहेंगे।

Scanned with CamScanner

(3) उत्पादन उपभोग के लिए होगा, लाभ के लिए नहीं; उत्पादन में स्वभावतः वृद्धि होगी। पूँजीवाद में उत्पादन सीमित है क्योंकि इसके अन्तर्गत श्रमिक-वर्ग का शोषण होने के कारण उनकी कार्य-कुशलता घटती है। उत्पादन पर श्रमिकों का स्वामित्व भी उत्पादन की वृद्धि में सहायक होगा।

(4) देश में सभी उत्पादन-स्रोतों को पूर्णतया उपयोग में लाया जाएगा। विज्ञान, दर्शन, कला आदि सभी क्षेत्रों में समान रूप से अधिकाधिक प्रगति का प्रयत्न किया जाएगा। सर्वांगीण उन्नति ही इस नए समाज का एकमात्र लक्षण होगा।

(5) प्रत्येक नागरिक को अनिवार्य रून से कोई-न-कोई कार्य करना होगा। "जो काम नहीं करेगा वह खाएगा भी नहीं।" प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार कार्य करना होगा और उनके लिए उचित वेतन मिलेगा। वेतन में भारी अन्तर न होगा।

(6) व्यक्तिगत सम्पत्ति की वृद्धि होगी। यहाँ यह जान लेना उचित होगा कि व्यक्तिगत सम्पत्ति और उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत अधिकार भिन्न है। उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत अधिकार का अर्थ है कारखानों और जमीन (जो उत्पादन के साधन हैं) पर एक या कुछ व्यक्तियों का स्वामित्व। व्यक्तिगत सम्पत्ति के अन्तर्गत हैं—मकान, मोटर, पुस्तक, साइकिल, रेडियो आदि उपभोग की वस्तुएँ। उत्पादन की वृद्धि के कारण वस्तुओं का मूल्य कम होगा। सभी नागरिक उनका उपभोग कर सकेंगे। परन्तु व्यक्तिगत सम्पत्ति के अधिकार का कोई व्यक्ति दुरुपयोग नहीं कर सकेगा, न ही उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत अधिकार होगा।

कम्युनिस्ट घोषणापत्र में यह निर्देश है कि "सर्वहारा-वर्ग अपने राजनीतिक प्रभुत्व का प्रयोग इस रूप में करेगा ताकि धीरे-धीरे पूँजीपतियों से सभी पूँजी छीन ली जाए और उत्पादन के सभी साधन राज्य के, अर्थात् शासक-वर्ग के रूप में संगठित सर्वहारा-वर्ग के हाथों में केन्द्रित हो जाएँ तथा कुल उत्पादन-शक्ति को अधिक-से-अधिक तेजी से बढ़ाया जाए।"

पूँजीपतियों का सम्पूर्ण विनाश तथा पूँजीवादी व्यवस्था के अविशिष्ट दोषों के दूर हो जाने पर राज्य की आवश्यकता भी समाप्त हो जाएगी और राज्य धीरे-धीरे लुप्त हो जाएगा। इस प्रकार राज्यविहीन और वर्गहीन शुद्ध समाजवादी समाज की स्थापना होगी। मार्क्स के इस विचार को रूस के साम्यवादियों ने एक दूसरा रूप दिया है, उनका कहना है कि "मार्क्स और एंगेल्स का अभिप्राय यह नहीं है कि साम्यवाद की स्थापना होने पर राज्य का ही लोप हो जाएगा। उनका अभिप्राय यह है कि संक्रमणकाल की समाप्ति पर राज्य के वर्गीय-रूप (सर्वहारा-वर्ग का अधिनायकत्व) मात्र का लोप हो जाएगा, अर्थात् राज्य वर्ग-संगठन न रहकर समस्त जनता की संस्था बन जाएगा।" लेनिन ने लिखा है, "हम लोग कल्पनावादी नहीं हैं, हम जानते हैं कि समाज में अपराधी और दुष्ट प्रकृति के लोग सदा विद्यमान रहेंगे तथा उनके नियन्त्रण के लिए राज्य की आवश्यकता सदा बनी रहेगी।"

Scanned with CamScanner